सर्व समस्याओं की मूल जड़ है आत्म-विस्मृति।

माउण्ट आबू, 6 फरवरी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी ने कहा है कि व्यक्ति और समाज की सर्व समस्याओं की मूल जड़ है आत्म-विस्मृति। मानव में आत्म स्मृति की जागृति लाना ही शिव द्वारा उदघोषित अध्यात्मिक क्रान्ति का लक्ष्य है। वे शनिवार को साप्ताहिक शिवरात्रि महोत्सव के तहत सनसेट रोड़ स्थित संगठन के आध्यात्मिक संग्रहालय में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित कर रहीं थी।

उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता की मशाल निरंतर जलाए रखने से मानव में देवत्व जागृत होता है। धर्मनिष्ठ लोकमान्यताएं भारत के लिए गौरव की बात है। आत्मिक स्मृति से ही आंतरिक बुराईयों से छुटकारा पाने की शक्ति प्राप्त होती है। वर्तमान में तीव्र गति से हो रहे मूल्यों के हनन को रोकने के लिए आध्यात्मिकता सार्थक साधन है। अध्यात्मिकता की मशाल निरंतर जलाए रखने से मनुष्य में देवताई गुणों का समावेश होता है। समाज में एकता बनाए रखने के लिए अपनेपन की भावनाओं को बल मिलता है।

सस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि शिवरात्रि पर्व परमात्मा शिव अवतरण का सूचक है। अज्ञानता के घोर तिमिर को समाप्त करने के लिए ही परमात्मा शिव का अवतरण होता है। अपने जीवन को ईश्वरीय मर्यादाओं के अनुकूल चलाने से मनुष्य विकारों से निजात पाकर कर्मेन्द्रियों पर पूरा नियत्रंण रख सकता है।

संस्था के महासचिव बी.के. निर्वैर ने कहा कि प्रचलित मान्यताओं के अनुरूप विभिन्न संस्कृतियों में पलने वाले मानव को एकता के पुनीतसूत्र में पिरोने वाले पर्वों में से शिवरात्रि महत्वपूर्ण पर्व है। पापाचार से बोझिल सृष्टि को पावन बनाने के लिए ही कल्याणकारी परमपिता शिव परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। यही शिवरात्रि का वास्तविक रहस्य है। आस्ट्रेलिया से आई डॉ. निर्मला ने कहा कि भारतीय संस्कृति व धर्म परायणता का अदभुत समन्वयकारी कल्याणप्रद इतिहास प्राचीनकाल से ही प्रचलित विचित्रताओं एंव विभिन्नताओं के आकर्षण का केंद्र बिंदू रहा है।

इस मौके पर आध्यात्मिक संग्रहालय प्रभारी बी के प्रतिभा बहन, अमेरिका से आई बी के मोहिनी बहन, जापान से आई रजनी बहन, सेनफ्रांसिसको से आई चंद्रू बहन और नेरोबी से आई प्रतिभा बहन ने भी विचार व्यक्त किए।